आदित्यह्रदयम् :

सूर्यदेव को समर्पित स्तोत्र

में से एक अंश

आदित्यह्रदयम्
श्लोक २१-२४

श्लोक २१

तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥

उन विश्वकर्मा को, उन दिव्य वास्तुकार को नमस्कार है
जिनकी चमक तप्त यानी पिघले हुए सुवर्ण के समान है,
जो आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक विचरण करते हैं,
जो अन्धकार पर विजय पाने वाले हैं;
जो प्रभा हैं, जगत के साक्षी हैं।

श्लोक २२

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥

वस्तुतः, भगवान इस संसार का नाश करते हैं
और फिर नवीन संसार का सृजन करते हैं।
अपने ताप से वे पी लेते हैं
और फिर जल-वर्षा करते हैं।

श्लोक २३

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥

जो सोए हुए हैं, उनमें वे जाग्रत हैं।
जिसका भी अस्तित्व है, उस सब में वे विद्यमान हैं।
वे अग्नि को अर्पित की हुई आहुतियाँ हैं
और वे ही उन आहुतियों का फल हैं।

श्लोक २४

वेदाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व एष रविः प्रभुः॥

वे वेद हैं, यज्ञ हैं, यज्ञों के फल हैं,
और जो यज्ञ सम्पन्न किए जाने चाहिए,
वे यज्ञ भी वे ही हैं।
इस जगत में भगवान रवि सब कुछ हैं।

***

महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत भाषा में रचित प्राचीन महाकाव्य, रामायण से लिए गए इस काव्यांश में सूर्यदेव का—जिन्हें रवि या आदित्य भी कहा जाता है—स्तुतिगान किया गया है; उनका वर्णन सृष्टि की प्राणदायिनी शक्ति के रूप में किया गया है।

ये श्लोक महाकाव्य के छठे काण्ड, युद्धकाण्ड से हैं जो कि इस महाकाव्य के चरम प्रसंगों में से एक है। धर्म के मूर्तरूप भगवान श्रीराम, अज्ञान के प्रतीक दैत्यराज रावण के साथ अपना युद्ध प्रारम्भ करने वाले

हैं। यह देखकर, ऋषि अगस्त्य महायोद्धा भगवान श्रीराम के समक्ष, प्रोत्साहित करने वाले शब्दों के साथ जाते हैं जो कि सूर्यदेव के प्रति रचित स्तुति, 'आदित्यहृदयम्' के रूप में हैं।

जैसे ही भगवान श्रीराम, सूर्यदेवता का आवाहन करते हैं, उन्हें अपने अन्दर अन्ततः, रावण को परास्त करने के बल व आत्मविश्वास की अनुभूति होती है। भगवान श्रीराम की विजय इस बात की सूचक है कि अज्ञान पर अन्तर-ज्ञान की विजय निश्चित है।

आदित्यहृदयम् के ये श्लोक हमें स्मरण दिलाते हैं कि हर नवीन आरम्भ सूर्यदेवता का सम्मान करने के लिए शुभ समय है। सूर्य चित्प्रकाश का प्रतीक है जिसमें अक्षय पोषणकारी शक्ति निहित है और जो प्रज्ञान का चिरस्थायी स्रोत भी है और नित्य नवीन स्रोत भी है।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।